धिक धिक पड़ो मेरी

धिक धिक पड़ो मेरी बुध को
मेरी बुध को, मेरे तन को, मेरे मन को,याद न किया धनी धाम।

जेहेर जिमी को लग रही, भूली आठों जाम।।
मूल वतन धनिएं बताइया,जित साथ स्यामा जी स्याम।

पीठ दई इन घर को, खोया अखंड आराम।।

सनमंध मेरा तासों किया, जाको निज नेहेचल नाम।
अखंड सुख ऐसा दिया, सो मैं छोड़्या विसराम।।

अखंड सुख छोड़या अपना, जो मेरा मूल मुकाम।
इस्क न आया धनिय का, जाए लगी हराम।।

पार द्वार सब खोल के, कर दई मूल पेहेचान।
संसे मेरे कोई न रह्या, ऐसे धनी मेहेरबान।।